शाला में पुस्तकालय : पढ़ने–लिखने के सन्दर्भ में

धीरज पटेल

बच्चे समझकर पढ़ना-लिखना सीखें यह ज़रूरी है, और यह सीखने में पुस्तकालय की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक ने पुस्तकालय की अहमियत को जानते हुए विद्यालय में बच्चों के साथ मिलकर पुस्तकालय शुरू किया। बच्चे कहानियों को पढ़ने लगे, मौखिक रूप से उन्हें सुनाने लगे, और तब ख़ुद से कहानियाँ लिखने भी लगे। लेख पढ़कर आप यह जान पाएँगे कि यह सब कैसे सम्भव हो पाया। शिक्षक की यह कोशिश इस विश्वास को भी पुख़्ता करती है कि सभी बच्चे पढ़-लिख सकते हैं। -सं.

परिचय

मेरे विद्यालय का नाम शासकीय प्राथमिक शाला सहजपुरीकलां है। यह विद्यालय मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सागर ज़िले के विकासखण्ड रहली मुख्यालय से 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सहजपुरीकलां गाँव की आबादी लगभग 1500 है। यहाँ के लोगों की आय मुख्यत: कृषि एवं कृषि से जुड़े कार्यों, और वनोपज पर निर्भर है। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता की आर्थिक स्थिति कमज़ोर है। कुछ बच्चों के माता-पिता काम की तलाश में शहर चले जाते हैं। बच्चे भी इनके साथ पलायन कर जाते हैं, और तीज-त्योहार या कृषि कार्य होने पर वापस आते हैं। कभी-कभी बच्चे 4-5 महीने बाद वापस आते हैं जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित होती है।

मेरी शाला में 67 बच्चे दर्ज हैं। शाला में एकल शिक्षक के रूप में इन बच्चों को पढ़ाने की नई-नई विधि पर कार्य करने का प्रयास करता हूँ। कक्षा के सभी बच्चों को पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ पुस्तकालय की किताबों से भी जोड़ने का प्रयास कर मैंने बच्चों में नैतिक-सामाजिक मूल्यों के साथ-साथ लेखन कौशल जैसी शैक्षिक गतिविधियों में दक्षता लाने का भी प्रयास किया है।

सन्दर्भ

कहानियाँ सुनना किसे पसन्द नहीं? गाँव के परिवेश में बच्चों में जब सुनने की समझ विकसित होती थी तभी से उन्हें दादा-दादी,

चाचा-चाची, मम्मी-पापा, या गाँव के बुज़ुर्ग *रामायण, महाभारत,* आल्हा-ऊदल, राजा हरिश्चन्द्र, मीराबाई, राजा-रानी, *पंचतंत्र* आदि की कहानियाँ सुनाते थे। आज तकनीकी के दौर में बच्चे घर व शाला में टीवी, मोबाइल में गेम खेलने में ज़्यादा व्यस्त रहते हैं। मैंने सोचा, शाला में ही ऐसे मौक़े निर्मित करें जहाँ बच्चा स्वतंत्र रूप से पढ़े और कहानियों से जुड़े। उसमें एकाग्रता के साथ लिखने की दक्षता विकसित हो। लेकिन इस कोशिश में महसूस हुआ कि बच्चे पढ़ने में रुचि नहीं ले रहे हैं। इसलिए यह निश्चय किया कि बच्चों के साथ पढ़ने के अवसर बनाने पर काम किया जाए ताकि वे पढ़ने में रुचि ले सकें, और उनमें पढ़ने की आदत भी विकसित की जा सके।

पुस्तकालय के उद्देश्य

- विद्यालय की किताबों को पढ़ने-पढ़ाने की आदत से जोड़ना;
- बच्चों में कहानी पढ़ने, सुनने-सुनाने एवं स्वयं से कहानी बनाने जैसे कौशलों का विकास करना;
- किताबों के माध्यम से बच्चों को स्वतंत्र अभिव्यक्ति और लेखन की ओर ले जाना।

पुस्तकालय और सीखने के प्रतिफल का सम्बन्ध

- कक्षा में पाठ्यपुस्तक के अलावा दूसरी किताबें उपलब्ध कराई जाती हैं, और उनके आधार पर अभिव्यक्ति व पढ़ने-लिखने के अवसर नियमित रूप से उपलब्ध कराए जाते हैं;
- कहानियों को पढ़ने-लिखने से जोड़ा जाता है;
- बच्चों को अपने मन से कहानी सुनाने और लिखने के अवसर दिए जाते हैं, और इस आधार पर उनकी मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति का आकलन किया जाता है;
- सीखने में चुनौती महसूस कर रहे बच्चों को अलग से समय दिया जाता है।

अपनाई गई आवश्यक प्रक्रिया

बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैंने उनके साथ मिलकर पुस्तकालय का निर्माण किया। बच्चों को पुस्तकें पढ़ने के लिए अतिरिक्त समय दिया जहाँ वे बिना किसी दबाव व रोक-टोक के पुस्तकालय से किताबें उठाएँ, और पढ़ने का प्रयास करें। वे किताबों को उलटें-पलटें, चित्रों को देखें, किताबों से बातें करें, पढ़ी हुई कहानियों को लिखें, और मन से भी कहानियाँ बनाकर लिखें।

पुस्तकालय निर्माण

राज्य शिक्षा केन्द्र से प्राप्त पुस्तकों को बच्चों के सहयोग से व्यवस्थित करके रजिस्टर में दर्ज किया गया। पुस्तकालय का माहौल तैयार करने के लिए विद्यालय के एक कक्ष में पुस्तकों को तार पर लगाया। शुरुआत में कम शब्दों वाली किताबें तार पर लगाई गई थीं। इसके बाद बच्चों से किताबें सँभालने की ज़िम्मेदारी पर चर्चा की। किताबों के इस्तेमाल को लेकर कुछ नियम बनाए गए। जैसे– लंच के बाद किताबें पढ़ा करेंगे, कोई पुस्तकों को फाड़ेगा नहीं, जिन बच्चों को किताबें चाहिए होंगी वे रजिस्टर में दर्ज करेंगे, आदि।

बच्चों में पढ़ने की रुचि एवं आदत का विकास

हर दिन पढ़ने का समय अलग से निकाला गया। शुरुआत में बच्चों को समूह में बैठाकर किताब की कहानी को मैंने पढ़कर सुनाया। इसके बाद कहानी पर चर्चा की गई। इसमें पात्रों के बारे में चर्चा, शीर्षक पर चर्चा, कहानी को

अपने शब्दों में बोलना, कुछ प्रश्नों पर बातचीत, आदि शामिल थे।

मैंने कुछ खेल गतिविधि करवाने के बाद और छुट्टी से पहले बच्चों को पढ़ने के लिए किताबें देना शुरू किया। बच्चों को उनकी मनपसन्द की किताब लेने और देखने की स्वतंत्रता दी गई। मैंने देखा कि शुरुआत में छोटे बच्चे सिर्फ़ चित्र देखते, और चित्र देखते हुए आपस में उन चित्रों के बारे में बातचीत करते। बड़े बच्चे छोटी कहानियों की किताबें उठाते थे। ऐसा करते हुए बच्चों को एक हफ़्ता लगा। मैंने तय किया था कि बच्चों के साथ टोका-टाकी नहीं करनी है ताकि बच्चों में इन किताबों के बारे में लगाव बने, और उनमें पढ़ने की रुचि उत्पन्न हो सके। बड़े बच्चे भी शुरुआत में एक या दो पैराग्राफ़ ही पढ़ने की कोशिश कर रहे थे।

एक हफ़्ते बाद मैंने बच्चों से उनकी पढ़ी हुईं किताबों पर बातचीत शुरू की। मसलन, उनके अनुसार कहानी में क्या हो रहा है, आदि। बड़े बच्चों द्वारा शुरू में कहानी का दोहरान ही किया जाता था।

पढ़ी हुई किताबों द्वारा मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति की ओर ले जाना

एक हफ़्ता बीत जाने के बाद मैंने बच्चों को पुस्तकालय से पढ़ीं कहानियों को सुनाना शुरू किया। मैंने पहले उन किताबों को सुनाने का निर्णय लिया जो छोटी और मज़ेदार थीं। इसके साथ ही प्रार्थना सभा के दौरान भी हर दिन एक या दो बच्चों द्वारा कहानी सुनाना तय किया गया। बच्चों के साथ बैठकर, बातचीत के ज़रिए यह तय किया गया कि अगले दिन की प्रार्थना सभा में कौन कहानी सुनाएगा। (आमतौर पर हम तय कर देते हैं कि कहानी कौन सुनाएगा। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि पढ़ने-लिखने की शुरुआत में बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित हो। एक अच्छा शिक्षक अपनी कक्षाओं में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का ध्यान रखता है। धीरे-धीरे बच्चे इस प्रक्रिया के महत्त्व को समझने लगते हैं, और स्वयं से पहल भी करने लगते हैं।) कुछ समय बाद बच्चे ख़ुद ही पूछने लगे कि सर, बाल सभा में भी हम कहानी सुना सकते हैं क्या। फिर हम प्रत्येक शनिवार को होने वाली बाल सभा में भी कहानी सुनाने को शामिल करने लगे। शुरुआत में कुछ बच्चों ने क्रम से कहानी सुनाई, कुछ ने किताब से पढ़कर, व कुछ ने अपने शब्दों में कहानी सुनाने की कोशिश की। मैंने देखा कि यदि बच्चे ख़ुद से पहल करते हैं तो उसपर काम करने का साहस भी दिखाते हैं। अपने काम के प्रति लगाव होने, और उसे प्रदर्शित करने से बच्चों में आत्मविश्वास पैदा होता है। इस प्रक्रिया के द्वारा बच्चों में कहानी सुनाने के कौशल के साथ-साथ आत्मविश्वास भी बढ़ा। जो बच्चे अभी पढ़ने में चुनौती महसूस कर रहे थे, वे भी कहानी सुनकर कहानी के बारे में चर्चा करने लगे और हिज्जे करके पढ़ने की कोशिश कर रहे हैं।

लिखित अभिव्यक्ति की ओर...

इस प्रक्रिया को ऊपर बताई गई सभी प्रक्रियाओं के साथ जोड़कर ही कक्षा में करवाया जाता है। इसको हम निम्न चरणों में देख सकते हैं :

पहला चरण

पुस्तक से पढ़ी हुई कहानी को देख-देख कर लिखने से लेखन की शुरुआत की गई। पढ़ी

गईं कहानियों को अपने शब्दों में लिखने को कहा गया। इसमें बच्चों को अपनी बुन्देलखण्डी भाषा के प्रयोग की छूट दी गई। शुरुआत में बच्चों को चुनौतियाँ आईं क्योंकि वे कहानी भूल जाते थे, या फिर ज्यों-का-त्यों लिखने की कोशिश करते थे। इसके लिए बच्चों को पढ़ी हुई कहानी को पहले अपने मन से सुनाने, और उसके बाद लिखने को कहा गया। इसके लिए मैंने भी कुछ कहानियाँ बच्चों को सुनाईं। बच्चों को कहानी सुनाने की युक्तियाँ और तरीक़े बताए। धीरे-धीरे बच्चे इन युक्तियों का इस्तेमाल करने लगे।

दूसरा चरण

इस प्रक्रिया का दूसरा चरण था, मन से कहानी बनाना। इस प्रक्रिया के लिए बच्चों को उनके परिवेश से जुड़े कुछ शब्द (जैसे– किसान, बैल, गाय, खेत, बादल, पानी, आदि) देकर उनसे मौखिक कहानी बनाने और उसे लिखने के लिए प्रेरित किया गया। बच्चे नई-नई कहानियाँ पढ़ रहे थे, इसलिए वे इन्हीं पढ़ी-सुनी कहानियों में इन नए शब्दों को जोड़ते हुए नई कहानी बना पाए। जिन बच्चों को लेखन में चुनौती आ रही थी, मैंने उनकी कहानियों को सुनकर लिखा और फिर उनसे पढ़ने को कहा। चूँकि यह कहानियाँ उन्होंने ही बनाई थीं, इसलिए उनको इन कहानियों को पढ़ने में आसानी भी हुई। स्वतंत्र लेखन की प्रक्रिया में बच्चों से मात्राओं, विराम चिह्नों जैसी भाषाई और व्याकरणिक त्रुटियाँ होती हैं। इनपर काम करने में एक शिक्षक को धैर्य रखने की ज़रूरत होती है। शुरुआत में जब अच्छा ख़ासा काम कहानी पर हो जाए, बच्चे ख़ुद से लिखने लगें, पढ़ने की कोशिश करने लगें, तभी विराम चिह्नों और मात्राओं पर काम शुरू करना चाहिए।

पुस्तकालय के इस्तेमाल का प्रभाव जो मैंने महसूस किया

- बच्चों में पढ़ने की रुचि बढ़ी। वे हर दिन नई किताब पढ़ने की कोशिश करते हैं।
- कक्षा 3-5 में नियमित आने वाले 35 बच्चों में से 18 बच्चे किताबों को धाराप्रवाह पढ़ने लगे हैं। इनमें से 12 बच्चे कहानी को अपने शब्दों में लिखने लगे हैं, और नई कहानी भी बनाने लगे हैं।
- कुछ बच्चे अभी हिज्जे करके पढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे बच्चों को अतिरिक्त समय दिया गया। इन

बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति अब काफ़ी बेहतर हो गई है। वे कम शब्दों में सरल वाक्य लिखने की ओर आगे बढ़ रहे हैं।

- शाला के ज़्यादातर बच्चों को किताबों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास होने लगा है। वे पुस्तकों को सहेजकर उपयुक्त स्थान पर रखते हैं, रजिस्टर में दर्ज कराते हैं, और दूसरे बच्चों को भी ऐसा करने की सलाह देते हैं।
- अलग-अलग पुस्तकों को पढ़ने से बच्चे अपनी पाठ्यपुस्तक की किताब भी समझ के साथ पढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। वे पाठ्यपुस्तक के पीछे दिए गए प्रश्न अभ्यास को भी अब मौखिक रूप से अपने शब्दों में बता पाते हैं।

इस प्रक्रिया से बनी मेरी समझ

शुरुआत में बच्चों के साथ इस काम को करना मुझे जटिल लग रहा था। मन में ख़्याल आ रहा था कि मैं अकेला इस काम को कैसे कर पाऊँगा। लेकिन बाद में ये चिन्ताएँ मुझे महत्त्वहीन लगीं। बच्चों की भूमिका बढ़ाने से उक्त प्रक्रियाएँ एक शिक्षक के लिए मददगार ही होती हैं। आज मेरे बच्चे अपनी पूरी सक्रियता और ज़िम्मेदारी से काम करने की पहल करने लगे हैं। शुरुआत में ज़रूर बच्चों को इस प्रक्रिया में जोड़ने में समय लगता है। यह समय कुछ कम-ज़्यादा हो सकता है, लेकिन यह स्वाभाविक-सी बात है कि छोटे बच्चों के साथ शिक्षक को पर्याप्त समय देना ही चाहिए।

हर दिन योजनाबद्ध तरीक़े से काम करने से प्रक्रिया सरल होती गई। लंच के समय सभी बच्चे पुस्तकालय में अपनी रुचि की पुस्तकें देखने व पढ़ने लगे हैं। उन्हें कहानियाँ समझ में आने लगी हैं। प्रार्थना सभा और शनिवार को बाल सभा के दौरान वे कहानियाँ सुनाने लगे हैं। प्रत्येक शनिवार मैं भी कोई-न-कोई कहानी बच्चों को सुनाता हूँ। मैंने देखा कि मैं जिस कहानी को पढ़कर सुनाता हूँ, बच्चे भी उस कहानी को ज़रूर पढ़ने की कोशिश करते हैं।

निरन्तर प्रयास से वे याद की गई कहानियाँ सुनाने लगे, और उन्हें सुन्दर व स्पष्ट अक्षरों में लिखने लगे। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि यह प्रयास मुझे सफल होता दिख रहा है। स्कूल में हम आमतौर पर किसी गतिविधि को एक या दो बार करके छोड़ देते हैं, लेकिन यदि हमारे अपने प्रयासों में निरन्तरता होती है तो उसका प्रभाव ज़रूर दिखता है। मेरा भी यह विश्वास पुख़्ता हुआ कि प्रक्रियाओं में निरन्तरता और रोचकता बनाए रखनी है।

अपने सभी बच्चों की क्षमताओं में विश्वास ज़रूरी होता है। सभी बच्चों को महसूस होना चाहिए कि वह सभी पढ़ना-लिखना सीख सकते हैं। शिक्षक ने यदि ज़रा भी शंका दिखाई तो

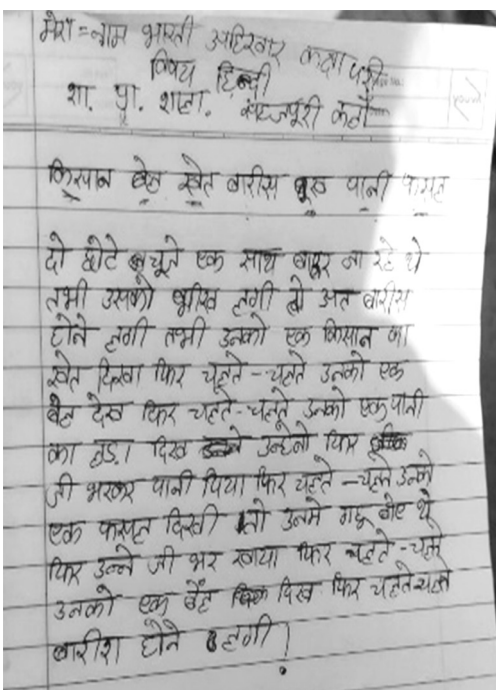

चित्र : एक बच्ची द्वारा दिए गए शब्दों का इस्तेमाल करते हुए मन से लिखी गई कहानी

बच्चे बहुत जल्दी हतोत्साहित होते हैं। बच्चों को प्रोत्साहित करने पर वे और उत्साह से प्रतिभाग करते हैं।

चुनौतियाँ

- शुरू में कुछ बच्चे किताबों को फाड़ देते थे, या उनमें कुछ लिख देते थे।
- बाल सभा में कहानी सुनाते समय शुरू में बच्चों को हिचक होती थी।
- कुछ बच्चों को अभी भी पढ़ने में चुनौती आ रही है।
- एकल शिक्षक स्कूल होने के कारण मैं कभी-कभी बच्चों को समय नहीं दे पाता हूँ।
- कुछ बच्चों को एक-दो किताबें ही ज़्यादा अच्छी लगती हैं। उनके अलावा वे कोई और किताब नहीं पढ़ना चाहते। उनको नई किताबों से जोड़ना भी एक चुनौती थी।
- बच्चों के नियमित शाला न आने से उनके सीखने का क्रम टूट जाता है।

आगे की योजना

- जो बच्चे अभी पढ़ने-लिखने में चुनौती महसूस कर रहे हैं उन्हें पढ़ने-लिखने की ओर ले जाने के लिए और सामग्री का निर्माण करना;
- जो बच्चे धाराप्रवाह पढ़ रहे हैं उनको एक स्तर ऊपर की किताबें देने के साथ नई-नई चुनौतियाँ देना;
- बच्चों को ख़ुद से कहानी बनाने को प्रेरित करना;
- किताबों की कहानियों को अपनी भाषा में लिखने का प्रयास करवाना;
- अगले साल तक अपनी शाला की एक किताब तैयार करना जिसमें बच्चों के हाथ से लिखी हुई कहानियाँ होंगी।

धीरज पटेल पिछले 12 वर्षों से प्राथमिक शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में सागर ज़िले के रहली ब्लॉक की प्राथमिक शाला सहजपुरी कलां में कार्यरत हैं। उन्हें बच्चों के साथ खेल- एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण करने और शाला में पुस्तकालय का सक्रिय संचालन करते हुए लोकभाषा में कहानी को प्रस्तुत करने में आनन्द आता है। उनकी पर्यावरण संरक्षण में गहरी रुचि है।

सम्पर्क : dheerajpatel309@gmail.com